अनेकार्थी शब्द

परिभाषा- 'ऐसे शब्द जिनके अनेक अर्थ होते हैं, उन्हें अनेकार्थी शब्द कहते हैं।' ऐसे शब्दों की परीक्षोपयोगी सामग्री अग्रलिखित है।

उदाहरण

अंकोर : गोद, भेंट, रिश्वत, कलेवा, दुपहरी।

अंब : आम का वृक्ष या फल, माता, दुर्गा।

अचल	:	पहाड़, अटल, निश्चल।
अदिति	:	देवताओं की माता, पृथ्वी, प्रकृति।
अर्क	:	सूर्य, आक, इन्द्र, ताँबा, विष्णु, आसवा
अरुणलोचन	:	लाल, नेत्र, कबूतर, कोकिल।
अर्णव	:	समुद्र, सूर्य, इन्द्र।
अर्भ	:	बालक, शिष्य, शिशिर, सागपात।
अश्म	:	पत्थर, पर्वत, बादल।

अलि : सखी, बिच्छू, भ्रमरी, पंक्ति, बाँध, सेतु।

उरु : जाँघ, विशाल, श्रेष्ठ।

कपि : बन्दर, हाथी, सूर्य।

कपिल : अग्नि, कुत्ता, चूहा, शिलाजीत, शिव, वानर, सूर्य, विष्णु, मटमैला, सफेद, एक मुनि।

कलधौत : सोना, चाँदी, सुमधुर, शब्द, सुन्दर, धुला हुआ।

कलापिनी	:	मोरनी, रात्रि।
कलि	:	विवाद, शिव, पाप, युद्ध, दु:ख, एक युग, वीर
कशिपु	:	तकिया, बिछौना, अन्न, भात, आसन, कपड़ा, प्रहलाद के पिता।
कांत	:	पति, श्रीकृष्ण, विष्णु, चन्द्रमा, शिव, बसन्त, ॠतु, कार्तिकय।

केहरी	:	सिंह, घोड़ा।
कोष	:	शब्द - संग्रह, खजाना, म्यान, डिब्बा।
घन	:	बादल, बड़ा हथौड़ा, घना, किसी संख्या को उसी संख्या से दो बार गुणा करने पर गुणनफल।
चक्री	:	विष्णु, कुम्हार।
जया	:	दुर्गा, पार्वती, पताका, हरी,

जलज	:	कमल, शंक, मोती, सेवार, चंद्रमा, मछली।
जीवन	:	पानी, जिन्दगी, प्राण, जल, पुत्र, गंगा, आजीविका।
ताल	:	तालाब, ताड़ का वृक्ष, संगीत का संमयक संकेत विशेष।
दुर्दर	:	मेढ़क, बादल।
द्रोण	:	कौआ, दोना, द्रोणाचार्य।

धनञ्जय	:	अर्जुन, अग्नि, चित्रक, वृक्ष, अर्जुन, विष्णु।
नंदिनी	:	गंगा, उमा, पुत्री, ननद, कामधेनु की बछिया।
नलिनी	:	कमलिनी, नदी।
पयोधर	:	बादल, स्तन, पर्वत, तालाब।
पानी	:	जल, चमक, सम्मान, वर्षा, इज्जत, लज्जा।
पिंजर	:	पिंजड़ा, अस्थिपंजर, पीला, सोना।
रसा	:	पृथ्वी, जीभ, शोरबा

माधव	:	बसन्त ऋतु, विष्णु, श्रीकृष्ण, बैसाख महीना
मिहिर	:	सूर्य, बादल, हवा, चन्द्र, आक।
रंभा	:	एक अप्सरा, केला, वेश्या।
रस	:	स्वाद, सार, आनन्द, जल, औषधि का अर्क।
रसाल	:	आम, ईख, रसीला, मीठा।
वन	:	जंगल, पानी, भवन, वाटिका।
शिव	:	कल्याण, महादेव, मंगल, भाग्यशाली।

नीलकण्ठ	:	मोर, शिव, एक पक्षी विशेष।
परिकर	:	कमरबन्द, परिवार, समूह, नौकर-चाकर
फल	:	मेवा, परिणाम, लाभ, शस्त्र का अग्रभाग
सारंग	:	छाता, तालाब, कमल, गहना, भौरा, चन्द्रमा, कपूर, स्त्री, फूल, श्री कृष्ण, रात्रि, समुद्र, बाण, पानी, दीपक, मेख, केश, खंजन, सर्प, मेढ़क, वस्त्र, धनुष, कामदेव, काजल, शोभा,

दिन, एक राग, एक रंग विशेष चन्दन,
घोड़ा, चातक, मधुमक्खी, मोर, बाज, सोना,
शंख, कोयल, मृग, हाथी,सिंह, हंस, सूर्य।

शूर	:	वीर, योद्धा, विष्णु, सिंह।
हरि	:	विष्णु, मेढ़क, सर्प, सूर्य, घोड़ा, चाँद, कामदेव, हाथी, आग, हंस, किरण।
वर	:	दूल्हा, आशीर्वाद, श्रेष्ठ, वरदान

विहंग, विहंगम : पक्षी, बादल, वायु, विमान, सूर्य, चन्द्रमा, तारागण, देवता।

सुरभि : पृथ्वी, गौ, सुगन्धि, सोना, वसंत, ऋतु, सुन्दर।

सुवर्ण : सोना, सुनहरा, सुंदर वर्ण का।

विलोम शब्द

विलोम शब्द का अर्थ है- उल्टा। यहाँ विशेष रूप से ध्यान देने की है-शब्द का विलोम उसी व्याकरणिक कोटि का होगा, जिसका वह मूल शब्द है। विलोम शब्द हमेशा सजातीय ही होते हैं अर्थात् संज्ञा का विलोम संज्ञा, सर्वनाम का विलोम सर्वनाम, विशेषण का विलोम विशेषण, क्रिया का विलोभ क्रिया पद और क्रिया विशेषण का क्रिया विशेषण होता है।

विलोम शब्दों के निर्माण में उपसर्गों की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। जिन उपसर्गों से विलोम शब्द बनते हैं, वे ये हैं -

उपसर्ग जोड़कर

'अ' उपसर्ग जोड़कर - सभ्य-असभ्य, न्याय-अन्याय, लौकिक-अलौकिक, हिंसा-अहिंसा, सामान्य-असामान्य।

'अप' उपसर्ग जोड़कर - यश-अपयश, उत्कर्ष-अपकर्ष, मान-अपमान, कीर्ति-अपकीर्ति।

‘अन्’ उपसर्ग जोड़कर - अंगीकार-अनंगीकार, उत्तरित अनुत्तरित, अस्तित्व-अनस्तित्व, अभिज्ञ-अनभिज्ञ।

‘निस्, निश्, निष् उपसर्ग जोड़कर - पाप-निष्पाप, सक्रिय-निष्क्रिय, सशुल्क-निःशुल्क, सचेष्ट-निश्चेष्ट, तेज-निस्तेज ।

‘निर् उपसर्ग द्वारा - अभिमान-निरभिमान, सापेक्ष-निरपेक्ष, आदर-निरादर, सामिष-निरामिष, सलज्ज-निर्लज्ज ।

‘वि’ उपसर्ग जोड़कर - सम्मुख-विमुख, राग-विराग, देश-विदेश, योजन-वियोजनः।

‘प्रति’ उपसर्ग से जोड़कर - आगामी प्रतिगामी, वादी प्रतिवादी, घात-प्रतिघात, रूप-प्रतिरूप, आगमन-प्रत्यागमन।

‘दुर’ उपसर्ग जोड़कर - सुबोध-दुर्बोध, सुव्यवस्थित-दुर्व्यवस्थित सज्जन-दुर्जन ।

‘दुस्’ उपसर्ग जोड़कर - सत्कर्म-दुष्कर्म, सच्चरित्र-दुश्चरित्र ।

‘कु’ उपसर्ग जोड़कर - सुपात्र-कुपात्र, सुपुत्र-कुपुत्र, सुपाच्य-कुपाच्य, सन्मार्ग-कुमार्ग।

(क) उपसर्ग परिवर्तन द्वारा - आदान-प्रदान, सुलभ-दुर्लभ, आयात-निर्यात, संयोग-वियोग।

(ख) लिंग परिवर्तन द्वारा - राजा-रानी, भाई-बहन, वर-कन्या, माता-पिता, नर-नारी, लड़का-लड़की।

(ग) प्रत्ययवत् प्रयुक्त शब्द-परिवर्तन द्वारा - केंद्राभिगामी-

केंद्रापसारी, गतिवान-गतिहीन।

(घ) नञ् द्वारा - सभ्य असभ्य, संभव असंभव, लौकिक-अलौकिक, आदि-अनादि।

(ङ) भिन्न शब्द द्वारा-लाभ-हानि, कटु-मधु, गुरु-लघु, मूक-वाचाल ।

अनुलोम	विलोम
अनुदार	प्रतिक्रियाशील
अधिकृत	अनधिकृत
अंतर्मुखी	बहिर्मुखी
अश्लील	श्लील
अंधकार	प्रकाश
अनधिकार	साधिकार

अभिव्यक्त	अनभिव्यक्त
अपना	पराया
अवयव	निरवयव
आर्ष	अनार्ष
आवर्षण	अनावर्षण
उज्ज्वल	धूमिल
ऋजु	वक्र

उपकारी	अनुपकारी
ऋत	अनृत
कलियुग	सतयुग
खाद्य	अखाद्य
ऐहिक	पारलौकिक
कर्मिष्ठता	अकर्मिष्ठता
चिंतित	चिन्ता रहित

ज्वलनशील	शमनशील
गहन	पुलिन
जागृत	सुप्त
जितेन्द्रिय	इन्द्रियासक्त
तम	ज्योत्स्ना
सुदिन	दामिनी
देदीप्यमान	तिमिरांकित

नगर	ग्राम
निर्दिष्ट	अनिर्दिष्ट
प्रामाणिक	अप्रामाणिक
बुद्धिमान	बुद्धिहीन
प्रकाशन	गोपन
मनसा	कर्मणा
रसीला	नीरस

लब्ध	प्रदत्त
अभिसरण	अपसरण
अनुरक्ति	विरक्ति
अपेक्षित	अनपेक्षित
अस्तित्व	अनस्तित्व
अनाहूत	आहूत
अस्तेय	स्तेय

अर्जित	अनर्जित
अशन	अनशन
अधोमुखी	ऊर्ध्वमुखी
आपूरित	रिक्त
उन्नयन	पलायन
ऊर्ध्व	अध:
उपार्जित	अनुपार्जित

उष्ण	शीतल
ऐच्छिक	अनैच्छिक
कथ्य	अकथ्य
ऐहिक	पारलौकिक
ऐश्वर्य	अनैश्वर्य
कृष्ण	शुक्ल, श्वेत
चारु	अचारु

पर्यायवाची

⇒ 1 से 2 प्रश्न

परिभाषा- प्रायः समान अर्थ रखने वाले शब्दों को पर्यायवाची शब्द कहा जाता है।

निम्न को तीन भागों में बाँटा जा सकता है-

1. **पूर्ण पर्याय**-वाक्य में यदि एक शब्द के स्थान पर दूसरा शब्द रखा जा सके और अर्थ में कोई अंतर न पड़ता हो, तो यह उसका पूर्ण पर्याय है। **जैसे-जलज, वारिज।**

2. **पूर्णापूर्ण पर्याय**-जो एक प्रसंग में तो पूर्ण पर्याय हो, किंतु दूसरे प्रसंग में समानार्थक न रह पाए; जैसे- कपड़े टांगना के स्थान पर कपड़े लटकाना कह दें तो वही अर्थ प्राप्त होता है, परंतु 'वह मुँह लटकाए बैठा है' के स्थान पर वह 'मुँह टाँगे बैठा है' नहीं कह सकते।

3. **अपूर्ण पर्याय**-समानार्थक शब्दों में अर्थ भेद

उदाहरण

अर्जुन : पार्थ, धनञ्जय, भारत, गुडाकेश, गांडीवधारी

अश्व : घोड़ा, घोटक, हय, बाजि, तुरंग

अचला : पृथ्वी, धरा, वसुधा, वसुन्धरा, महि, धरती

आँख : दृग, लोचन, चक्षु, नेत्र, दृष्टि, नयन, अक्षि

आम : आम्र, रसाल, पिकवल्लभ, फलश्रेष्ठ, सहकार, अमृतफल, पिकप्रिय, पियम्बु, पिकबन्धु

आँसू : अश्रु, नयननीर, नयनजल, नेत्रवारि

आदित्य : सूर्य, रवि, भानु, प्रभाकर, दिवाकर, भास्कर

आकाशगंगा : मंदाकिनी, नभगंगा, सुरनदी, नभोनदी

इच्छा : चाह, कामना, अभिलाषा, आकांक्षा, मनोरथ, ईप्सा, लालसा, स्पृहा, वांछा, ईहा, लिप्सा, मर्जी, उत्कंठा ऊँट उष्ट्र, महाग्रीव, लम्बोष्ठ, क्रमेलक

ऐश्वर्य : ऋद्धि, समृद्धि, सम्पन्नता, वैभव, श्री, सम्पदा,

सम्पत्ति

ऐच्छिक : वैकल्पिक, स्वेच्छाकृत, सविकल्प, मनचाहा

औषधि : दवा, दवाई, भेषज, औषध

कबूतर : कपोत, पारावत, रक्तलोचन, हारीत, परेवा

कल्पवृक्ष : पारिजात, देवद्रुम, कल्पद्रुम, कल्पतरु, मन्दार

कुबेर : धनद, किन्नरेश, यक्षपति, श्रीद, धनेश्वर, राजराज, धनाधिप

कौआ : काग, काक, वायस, एकाक्ष, करट

केश : अलक, गेसू, बाल, कुंतल, कच

गदहा खर, रासभ, वैशाखनंदन, गर्दभ

चाँदनी : चन्द्रिका, ज्योत्स्ना, कौमुदी, जुन्हाई

जल : नीर, सलिल, उदक, पानी, अम्बु, तोय, वारि,
पय, जीवन, आब, मेघपुष्प, सारंग, पाथ, सर्वमुख

जीभ : जिह्वा, रसना, रसज्ञा, जबान

झोपड़ी : कुटी, कुटिया, मड़वा, पर्णकुटी, छानी, कुंज

तरकस : तूणीर, निषंग, तूण, तूणी, इषुधि

तारा : नक्षत्र, तारक, उडगन, सितारा

दिन : अहन, वासर, वार, दिवस, दिवा

दुर्गा : सिंहवाहिनी, अजा, कालिका, चण्डिका, भवानी, कल्याणी, कामाक्षी, धात्री, अभया, शाम्भवी, महागौरी, चामुण्डा, वागीश्वरी

द्रोपदी	:	कृष्णा, द्रुपदसुता, पांचाली, सैरंध्री, याज्ञसेनी
दामिनी	:	चपला, तड़ित, प्रभा, विद्युत, बिजली
पुत्री	:	तनया, बेटी, आत्मजा, सुता, अपत्या, नन्दिनी, कन्या, तनूजा
परशुराम	:	भृगुनंदन, भृगुसुत, भार्गव, परशुधर
बिजली	:	दामिनी, चपला, सौदामिनी, विद्युत, क्षणप्रभा, तड़ित

ब्राह्मण : द्विज, विप्र, भुसुर, भूदेव, बाभन

भगिनी : बहन, सहोदरा, दीदी, जीजी

मेढक : मण्डूक, दर्दुर, दादुर, भेक, वर्षाभू

यमुना : सूर्यतनया, तरणि-तनूजा, जमुना, कालिन्दी, रवितनया, रविसुता, भानुजा

रात्रि : निशा, रजनी, यामिनी, विभावरी, रैन, त्रियामा, रात, तमी, निशीथ, क्षपा

रामचन्द्र : राम, रघुपति, राघव, रघुनंदन, रघुवर, रघुराज, सीतापति, अवधेश, जानकीवल्लभ, रावणारि

वन : अरण्य, विपिन, अटवी, कानन, जंगल, कांतार

विष्णु : नारायण, दैत्यारि, पुण्डरीकाक्ष, जनार्दन, चक्रपाणि, उपेन्द्र, श्रीपति, चतुर्भुज, विश्वम्भर, गरुड़ध्वज, अच्युत, मुकुन्द, हृषीकेष

महा + ईश
आ + ई = ए
गिरि + ईश

शिव : महेश, पशुपति, शंकर, चन्द्रशेखर, भूतेश, गिरीश,

श्रीकंठ, महादेव, त्रिलोचन, रुद्र, हर, स्मरारि

सर्प अहि, सांप, व्याल, नाग, भुजंग, हरि,

विषधर, मणिधर, पन्नग, सारंग, उरग

अमृत : पीयूष, सुधा, सोम, अमी, सुरभोग

अग्नि : आग, कृशानु, अनल, पावक, वह्नि, हुताशन,

धूम्रकेतु, धनञ्जय, वैश्वानर, हव्यवाहन

अरण्य : जंगल, विपिन, कानन, वन, कांतार

आकाश : गगन, नभ, अभ्र, व्योम, अनन्त, अम्बर, शून्य

इन्द्राणी : शची, पौलोमी, इन्द्रवधू, इन्द्रा, महेन्द्री, मधवानी

कपड़ा : वस्त्र, वसन, पट, चीर, पहरावा, परिधान, अम्बर

कोयल : कोकिला, पिक, श्यामा, मदनशलाका

कामदेव : मदन, मन्मथ, मयन, मार, मनसिज, मकरध्वज, रतिपति, मनोज, मीनकेतु, पंचशर, काम, अनंग, कंदर्प, कुसमेषु, प्रद्युम्न, स्मर

मन + ज

गणेश ⇒ ॥ नाम

विनायक	पार्वती नन्दन
एकदन्त	पार्वती सुत
मूषकवाहन	पार्वती तनय
श्रीदेव	पार्वती पुत्र
लम्बोदर	शिवपुत्र
गजानन	शिवसुत
गजोदर	शिवनन्दन

कृष्ण : माधव, राधारमण, श्याम, नंदनंदन, मुरलीधर, गिरिधर, वंशीधर, कंसारि, हृषीकेश, मधुसूदन, मुकुन्द, गोपीनाथ, वासुदेव, केशव, कन्हैया

गंगा : सुरसरि, जाह्नवी, मन्दाकिनी, त्रिपथगा, भागीरथी, देवनदी, देवपगा, विष्णुपदी

गणेश : गजानन, हेरम्ब, विनायक, लम्बोदर, गणपति

मुहावरे

मुहावरे-लोक मानस की चिरसंचित अनुभूतियाँ हैं। उनके प्रयोग से भाषा की सजीवता की वृद्धि होती है। मुहावरे भाषा के प्राण हैं।

- डॉ. मनोहरलाल गौड़

मुहावरा- कोई भी ऐसा वाक्यांश, जिसका शब्दार्थ ग्रहण न करके कोई विलक्षण अर्थ ग्रहण किया जाता हो, वह मुहावरा कहलाता है।

उदाहरण

1. अंडे सेना (घर ही में बैठे रहना) - घर में पड़े पड़े अण्डे सेने से काम नहीं चलेगा। बाहर निकल कुछ काम करो।

2. आकाश पाताल का अंतर होना (बहुत अधिक अंतर) - हमारी तुम्हारी हैसियत में आकाश पाताल का अंतर है।

3. एक ही थैली के चट्टे बट्टे (सब एक समान) - किसे अच्छा कहूँ किसे बुरा कहूँ। यहा तो सब एक ही थैली के चट्टे बट्टे हैं।

4. गरदन पर छुरी फेरना (किसी का अनिष्ट करना) - मेरे रिश्तेदार हैं कि हमेशा मेरी गर्दन पर छुरी फेरने के फिराक में रहते हैं।

5. चींटी के पर निकलना (मृत्यु सन्निकट होना) - आजकल वह पुलिस को चुनौती देने लगा है चींटी के पर निकल आया है।

6. जीती मक्खी निगलना (जान-बूझकर बुराई की उपेक्षा करना) - वह घर में पैसे चुराकर खर्च कर आया, पिता इसको, जानकर जीती मक्खी निगल गये।

7. झोली डालना (भीख देना)- मैंने पाँच रुपये भिखारियों की झोली में डाल दिये।

8. ठकुर सुहाती करना (हाँ में हाँ मिलाना) - अधिकांश लोगों को मैंने ठकुर सुहाती करते हुए देखा।

9. डोलती नौका (अस्थिर अव्यवस्था) - आज की राजनीति डोलती नौका के समान है।

10. गुड़ गोबर करना (सब काम बिगाड़ देना) -बड़ी मुश्किल से समझा बुझाकर उसे समझौते के लिए तैयार किया था, किन्तु तुमने धमकी देकर सब गुड़ गोबर कर दिया।

11. कान फूंकना - दीक्षित करना

12. सूरत नजर आना - बहुत दिनों बाद दिखाई पड़ना

13. आँख का नीर ढल जाना - निर्लज्ज हो जाना

14. दाम लगाना - मूल्य आँकना

15. कच्चे घड़े से पानी भरना - ठीक ढंग से काम न करना

16. शैतान की आँत - बहुत लम्बी वस्तु

17. हाथ ऊँचा होना - दान आदि के लिए मन में उदारता का भाव होना

18. तीन तेरह होना - तितर बितर होना

19. छक्के छुड़ाना - हारना

20. पौ बारह होना - लाभ ही लाभ होना

21. जौहर खुलना - भेद का पता लगना

22. नौ-दो ग्यारह होना - रफू चक्कर होना

23. तिलांजलि दे दी - पूर्णतः मुक्त होना

24. लंगोटी में फाग - दरिद्रता में आनंद मनाना

25. खुन पानी होना - कोई असर न होना

26. माथा ठनकाना - अनिष्ट की आशंका होना

27. ठीकरा फूटना - किसी के सर झूठा दोष लगाना

28. अंधेर नगरी - अन्याय की जगह

29. कौड़ी को न पूछना - निकम्मा होना

30. तालु में जीभ न लगना - चुप न रहना

31. हाथ पीले करने - विवाह करने का

32. आँखों का तारा - बहुत प्रिय

33. फिसल पड़े तो हर गंगे - मजबूरी में काम पड़ना

34. आधा तीतर आधा बटेर - बेमेल तथा बेढंगा होना

35. गुलर का फूल होना - कभी भी दिखाई न देना

36. टिप्पस लगाना - सिफारिश करना

लोकोक्ति

लोकोक्ति-यह वास्तव में वह तीखी युक्ति है जो श्रोता के हृदय पर सीधा प्रभाव डालती है। इसे कहावत, प्रवाद, वाक्य, जनश्रुति आदि नामों से भी संबोधित किया जाता है।

मुहावरा और लोकोक्ति में अंतर

मुहावरा वाक्यांश है और इसका स्वतन्त्र रूप से प्रयोग नहीं किया जा सकता। लोकोक्ति सम्पूर्ण वाक्य है और इसका प्रयोग स्वतन्त्र रूप से किया जा सकता है। जैसे-‘होश उड़ जाना’ मुहावरा है। ‘बकरे की माँ कब तक खैर मनाएगी’ लोकोक्ति है।

समानता

1. दोनों ही भाषा शैली को सरस एवं प्रभावशाली बनाते हैं।
2. दोनों ही गंभीर और व्यापक अनुभव की उपज है।
3. दोनों ही विलक्षण अर्थ प्रकट करते हैं।
4. दोनों में प्रयुक्त शब्दों के स्थान पर पर्यायवाची या समानार्थी शब्दों का प्रयोग नहीं होता है।
5. दोनों की सार्थकता प्रयोग के बाद सिद्ध होती है।

उदाहरण

1. अन्धे बाँटे रेवड़ी फिर-फिर अपने को देय - अपने सम्बन्धियों को ही लाभ पहुँचाना।

2. का वर्षा जब कृषि सुखाने - मौका निकाल जाने पर सहायता करना व्यर्थ है।

3. चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात - सुख के समय बहुत थोड़े दिनों के लिए आते हैं।

4. तीन लोक से मथुरा न्यारी - अन्य से विशिष्ट या भिन्न होना।

5. धन का धन गया, मीत की मीत गई - उधार देने में पैसा और मित्रता दोनों जाती है।

6. बाप बड़ा न भैया, सबसे बड़ा रुपैया - संसार में पैसे का महत्व सर्वाधिक है।

7. यह मुहँ और मसूर की दाल - अपनी हैसियत से अधिक बातें करना।

8. रोपे पेड़ बबूल का आम कहाँ से होय - जो जैसा करता है उसे वैसा ही फल मिलता है।

9. सदा नाव कागज की बहती नहीं - धोखेबाजी ज्यादा दिन नहीं चलती।

10. नेकी कर दरिया में डाल - नेकी करके भूल जाना चाहिए।

11. काठ की हाँडी बार-बार नही चढ़ती - छल कपट का व्यवहार हमेशा नहीं चलता

12. आये थे हरिभजन को ओटन लगे कपास - किसी कार्य विशेष की उपेक्षा कर किसी अन्य कार्य में लग जाना

13. घाट - घाट का पानी पीना - बहुत अनुभवी होना

14. जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि - कवि के लिए कुछ भी अगम्य नहीं

15. पुचकारता कुत्ता सिर चढ़े - ओछे लोग मुँह लगाने पर अनुचित लाभ उठाते हैं

16. ऊँट की चोरी निहुरे-निहुरे - प्रकट हो जाने वाले काम को छुपछुपकर करना

17. एक तवे की रोटी क्या छोटी, क्या मोटी - किसी प्रकार का भेदभाव नहीं है

18. कमरी ओढ़ने से कोई फकीर नहीं होता - ऊपरी दिखावे से दोष नहीं छुपते

19. करमहीन खेती करे, बैल मरे या सूखा पड़े - दुर्भाग्य होने पर सभी काम बिगड़ते हैं

20. तोते की तरह आँखे फेरना - पुराने सम्बन्धों को एकदम भुला देना

21. मखमली जूते मारना - मीठी बातों से लज्जित करना

22. हथेली पर सरसों जमाना - काम इतनी जल्दी नहीं हो जाता

23. दिन को दिन रात को रात न समझना - कोई बड़ा काम करते समय अपने सुख आराम का कुछ भी ध्यान न रखना

24. कूद-कूद मछली बगुले को खाय - पूर्णतः प्रतिकूल काम को करना

25. कोठी वाला रोवै, छप्परवाला सोवै - बहुत अधिक धन चिन्ता का कारण होता है।

26. खरी मजूरी चोखा काम - नकद पारिश्रमिक देने से ही काम अच्छा होता है।

27. गयी माँगते पूत खो आई भतार - थोड़े लाभ के चक्कर में अधिक नुकसान कर बैठना।

28. गरीब की जोरू सब गाँव की भौजाई - कमजोर से सब लाभ उठाते हैं।

29. चक्की में कौर डालोगे तो चून पाओगे - कुछ प्रत्यन से ही फल मिलेगा

30. चुल्लू - चुल्लू साधेगा, दुआरे हाथी बाँधेगा - थोड़ा थोड़ा इकट्ठा करके धनी होना

31. चूहे के चाम से नगाड़े नहीं मढे जाते - तुच्छ और अल्प वस्तु से बड़ा काम नहीं हो सकता।

32. चूहे घर में डण्ड पेलते है - अत्यधिक दयनीय स्थिति

33. छँटाक चून चौबारे रसोई - केवल दिखावा

34. डंके की चोट पर कहना - सबके सामने घोषित करना

समोच्चरित भिन्नार्थक शब्द

हिन्दी भाषा में कई शब्द ऐसे होते हैं, जिनके उच्चारण और वर्तनी में बहुत कम भिन्नता होती है, परन्तु अर्थ की दृष्टि से वे बिल्कुल भिन्न होते हैं। ऐसे ही शब्दों को युग्म-शब्द कहते हैं। जैसे- अनिल-अनल, अलि-अली आदि।

समोच्चरित भिन्नार्थक शब्द- हिन्दी में कुछ शब्द ऐसे होते हैं, जिनका प्रयोग गद्य की अपेक्षा पद्य में अधिक होता है। इन्हें 'युग्म

शब्द' या समोच्च्चरित भिन्नार्थक शब्द कहते हैं। इनमें शब्दों की मात्राओं अथवा वर्णों में परिवर्तन करने से अर्थ में काफी अन्तर आ जाता है। जैसे- अथक- बिना थके हुए, अकथ जो कहा न जाय।

उदाहरण

अनिल	-	हवा (वायु)
अनल	-	आग (अग्नि)
आकर	-	खान, खजाना

आकार	-	आकृति, रूप
अलि	-	भौंरा
अली	-	सखी
आधि	-	मानसिक कष्ट
आधी	-	आधा भाग
अभिराम	-	सुन्दर
अविराम	-	निरन्तर

अभय	-	निर्भय, जीवनदान
उभय	-	दोनों
अचल	-	स्थिर
अचाला	-	पृथ्वी
अम्बुज	-	कमल
अम्बुद	-	बादल
अणु	-	कण

अनु	-	पीछे
अन्न	-	अनाज
अन्य	-	दूसरा
अब्ज	-	कमल
अब्द	-	बादल, वर्ष
अशक्त	-	शक्तिविहीन (शक्तिहीन), असमर्थ
असक्त	-	विरक्त

अनिष्ट	-	हानि
अनिष्ठ	-	निष्ठाहीन
आरसी	-	दर्पण
आरषी	-	वैदिक वाणी
अवधि	-	काल, समय
अवधी	-	अवध की भाषा (अवधी भाषा)
अवलंब	-	सहारा

अविलंब	-	शीघ्र
अरि	-	शत्रु
अरी	-	सम्बोधन
अभिज्ञ	-	जानने वाला
अनभिज्ञ	-	अनजान
उपकार	-	भलाई
अपकार	-	बुराई

आर्त	-	दु:खी
आर्द्र	-	गीला
आर्द्रा	-	एक नक्षत्र
अर्घ	-	जलदान
अर्ध्य	-	पूजाद्रव्य, बहुमूल्य
अभिज्ञ	-	जानने वाला
अविज्ञ	-	जो जानता न हो।

अमित	-	अपरिमित
अमीत	-	शत्रु
असन	-	भोजन
आसन	-	बैठने की वस्तु
अंस	-	कंधा
अंश	-	हिस्सा, भाग
अर्जन	-	प्राप्त करना

अर्चन	-	पूजा
अवधूत	-	साधू
अधूत	-	निडर
असित	-	काला
अयश	-	बदनामी
आदेश	-	आज्ञा
उपदेश	-	शिक्षा, सीख, नेक सलाह

उपयोग	-	लाभ
उपभोग	-	भोगना, स्वाद लेना
आहार	-	भोजन
उपहार	-	भेंट, सौगात
आदी	-	अभ्यस्त, अदरक
आदि	-	आरम्भ

वाक्यांश के लिए एक शब्द

हिन्दी में एक वाक्य, वाक्यांश अथवा अनेक शब्दों के लिए जो एक शब्द का प्रयोग होता है, वह प्रायः संस्कृत से लिया जाता है। संस्कृत के ये शब्द हिन्दी में रूढ़ से हो गये हैं। हिन्दी में ऐसे शब्दों की बहुत कमी है। इसका कारण है कि संस्कृत संश्लिष्ट भाषा है और हिन्दी विश्लिष्ट। इस महत्त्वपूर्ण तथ्य का ध्यान रखना अत्यंत ही आवश्यक है।

परिभाषा : कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक विचारों की अभिव्यक्ति के लिए 'वाक्यांशों के लिए एक शब्द' का प्रयोग बहुउपयोगी होता है। ऐसे शब्दों को अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द भी कहा जाता है। प्रतियोगी छात्रों के अध्ययन की सुविधा के लिए वाक्यांशों के समानार्थक शब्दों तथा विशेष भाव-वाचक शब्दों की सूची दी गयी है।

उदाहरण

- जो सबके अन्तःकरण की बात जानने वाला हो - अन्तर्यामी
- जो पहले कभी न हुआ हो - अभूतपूर्व
- जो शोक करने योग्य न हो - अशोक
- जो खाने योग्य न हो - अखाद्य
- जो पिया न जा सके - अपेय

- जो टूट न सके - अटूट
- जिसका खंडन न किया जा सके - अखंडनीय
- जिसके खण्ड या टुकड़े न हुए हों - अखंडित
- जो क्षीण न हो सके - अक्षय
- जो निन्दा के योग्य न हो - अनिन्दनीय
- जो वन्दना के योग्य न हो - अवन्दनीय

- जिसकी गहराई या थाह का पता न लग सके - अथाह
- जो गाये जाने योग्य न हो - अगेय
- जो चिन्ता के योग्य न हो - अचिन्त्य,
- जिसमें चेतना न हो - अचेतन
- जो छेदा न जा सके - अछेद्य
- जो इन्द्रियों द्वारा न जाना जा सके - अगोचर,

- किसी के पास रखी हुई दूसरे की वस्तु - अमानत
- जो बीत चुका हो - अतीत
- जिसकी माँग न की गयी हो - अयाचित
- जो दिखायी न पड़े - अदृश्य,
- जो सदा से चला आ रहा है - अनवरत
- जो कभी नहीं मरता - अमर्त्य,

- जो आगे (दूर) की न सोचता हो - अदूरदर्शी
- जो आगे (दूर) की सोचता हो - अग्रसोची, दूरदर्शी
- जो दूर की बात सोच न सके - अनाग्रसोची
- मन में आप से आप उत्पन्न होने वाली प्रेरणा - अंत:प्रेरणा

- धरती (पृथ्वी) और आकाश के बीच का स्थान- अंतरिक्ष
- मन में होने वाला स्वाभाविक ज्ञान - अंतर्ज्ञान
- जिसका कोई अर्थ न हो - अर्थहीन
- आगे बढ़कर स्वागत करना - अगवानी
- किसी देश के अन्दर होने वाला या उससे सम्बंध रखने वाला - अंतर्देशीय

- जो किसी वस्तु के अंदर दृढ़तापूर्वक वर्तमान या स्थित है - अंतर्निविष्ट
- जिस पर आक्रमण न किया गया हो - अनाक्रांत
- जिसे जीता न जा सके - अजेय
- बिना वेतन काम करने वाला - अवैतनिक
- जिसका जन्म पहले हुआ हो (बड़ा भाई) - अग्रज

- जिसका जन्म पीछे हुआ हो (छोटा भाई) - अनुज
- छोटी बहन - अनुजा
- दोपहर के बाद का समय - अपराह्न
- जिसकी गिनती पहले हो - अग्रगण्य
- जो पराजित न किया जा सके - अपराजेय
- जो पढ़ा न जा सके - अवाच्य,

अपठनीय

- अन्य भाषा में परिणति - अनुवाद,रूपान्तरण
- अधिक बढ़ा-चढ़ा कर कहना - अतिशयोक्ति, अतियुक्ति
- आगे बढ़कर अभ्यर्थना करना - अगवानी

- जिसका परिहार (त्याग) न हो सके/जिसको छोड़ा न जा सके - अपरिहार्य
- जिसका सुनभव किया जा चुका हो - अनुभूत
- जो पहले दे दिया जाये - अग्रिम
- जो सबके आगे रहता हो - अग्रणी

- जिसका जीतने वाला कोई शत्रु न जन्मा हो, जिसका कोई शत्रु न हो - अजातशत्रु
- जिसके पास कुछ न हो - अकिंचन
- जो कानून के प्रतिकूल हो/जो विधि के विरुद्ध हो - अवैध,अविधिक
- जो प्रमाण से सिद्ध न हो सके - अप्रमेय

- जो तौला या नापा न जा सके - अपरिमेय
- जो समय पर न हो - असामयिक
- जो अवश्य होने वाला हो - अवश्यम्भावी
- जिसका विवाह न हुआ हो - अविवाहित
- जिसे भुलाया न जा सके - अविस्मृति
- जो व्यवहार में न लाया गया हो - अव्यवहृत

- जो शोक करने योग्य न हो - अशोच्य
- जो नहीं हो सकता - असम्भव
- जिसमें सामर्थ्य न हो - असमर्थ
- जो सबके अन्तः करण की बात जानने वाला हो- अन्तर्यामी
- जिसका इलाज न हो सके - असाध्य
- अहंकारपूर्वक अपने को सबसे बढ़कर समझना - अहंमन्यता

- जिसमें किसी का कोई हेतु या कारण न हो - अहैतुक
- जो नया न हो - अनूतन
- किसी कार्य के लिए दी जाने वाली आर्थिक सहायता - अनुदान
- किसी और स्थान पर - अन्यत्र
- जिसका मन किसी दूसरी ओर लगा हो - अन्यमनस्क

- जिस पर अपकार किया गया हो - अपकृत
- आवश्यकता से अधिक धन को ग्रहण न करना - अपरिग्रह
- सामान्य या व्यापक नियम के विरुद्ध - अपवाद
- व्यर्थ/अनुचित खर्च करने वाला - अपव्ययी
- जिसका अंग दुरुस्त न हो - अपांग, विकलांग

- जिसके पार की वस्तु को न देखा जा सके - अपारदर्शी
- जो पहले न हुआ हो - अपूर्व
- जो अभी प्रकाश में न आया हो या जिसका प्रकाशन न हुआ हो - अप्रकाशित
- जिसकी पहले से कोई आशा न हो - अप्रत्याशित
- जिसमें कोई बाधा या रोक-टोक न हो - अबाध

- पुरुष जो अभिनय करता हो - अभिनेता
- स्त्री जो अभिनय करती हो - अभिनेत्री
- जो किसी अल्पवयस्क या अनाथ बच्चे की देखरेख करता हो - अभिभावक
- जो भेदा या तोड़ा न जा सके - अभेद्य
- छहः महीने में एक बार होने वाला - अर्धवार्षिक

- जो इस लोक में संभव न हो - अलौकिक
- जिसका अस्तित्व अल्पकाल तक रहे - अल्पकालिक
- जिसे मारना उचित न हो - अवध्य
- जिसका जन्म छोटी जाति (निचले वर्ण) में हुआ हो - अंत्यज

- किसी पद्य के अंतिम अक्षर से नया पद्य आरम्भ करने का खेल - अंत्याक्षरी
- तर्क के बिना मान लिया गया विश्वास - अंधविश्वास
- अपने अंश या हिस्से के रूप में कुछ देना या किसी कार्य में योग देना - अंशदान
- जिसमें काँटे या विघ्न-बाधा न हो - अकंटक

- जो अभी-अभी उत्पन्न हुआ हो अद्यः - प्रसूत
- जिसमें कुछ करने की क्षमता न हो - अक्षम
- जिसको क्षमा न किया जा सके - अक्षम्य
- जो न जाना जा सके - अज्ञेय
- जो कुछ न जानता हो - अज्ञ, अज्ञानी
- जो न जाना गया हो - अज्ञात

- जो गिना न जा सके - अगणित, अनगिनत
- जिसके अंदर या पास न पहुँचा जा सके - अगम्य
- जो कार्य-रूप में न लाया जा सके - अव्यावहारिक
- जिस स्त्री के पुत्र और पति न हों - अवीरा
- कम बोलने वाला - अल्पभाषी,

मितभाषी

- थोड़ा जानने वाला - अल्पज्ञ
- जो प्राप्त न हो सके - अप्राप्त, अप्राप्य
- जिसका कभी अन्त न हो - अनन्त

बिल्कुल बरसात न होना - अनावृष्टि

- आवश्यकता से अधिक बरसात - अतिवृष्टि
- रूप के अनुसार - अनुरूप
- सोच-समझकर कार्य न करने वाला - अविवेकी
- कमर के नीचे पहले जाने वाला वस्त्र - अधोवस्त्र
- जिस पुस्तक में आठ अध्याय हों - अष्टाध्यायी
- जो पहले कभी घटित न हुआ हो - अघटित

- जिसकी परिभाषा देना संभव न हो - अपरिभाषित
- जिसमें शक्ति न हो - अशक्त, निर्बल
- जो समान न हो - असमान
- जिसका विभाजन न किया गया हो - अविभक्त
- जो परिणय सूत्र में न बँधा हो - अपरिणीत

- जिस वस्त्र को पहना नहीं गया हो - अप्रहत
- विकृत शब्द/बिगड़ा हुआ शब्द - अपभ्रंश
- जिसके अन्दर प्रशंसा करने की योग्यता न हो - अप्रशस्त
- न करने योग्य - अकरणीय
- बिना पलक गिराये/झपकाये - अपलक
- मास के किसी पक्ष की आठवीं तिथि - अष्टमी

- मास के किसी पक्ष की पन्द्रहवीं तिथि - अमावस्या
- अंक (गोद) में सोने वाली स्त्री - अंकशायिनी
- अंक (गोद) में सोने वाला पुरुष - अंकशायी
- अंक (गोद) में स्थान पाया हुआ - अंकस्थ
- बिना देख-रेख का जानवर - अनेर
- जिसे अधिक बकवास करना न आता हो - अप्रगल्भ

- जो विश्वास करने योग्य (लायक) न हो - अविश्वसनीय
- जो दोहराया न गया हो - अनावर्त
- जो बिल्कुल खुला हो - अनावृत्त
- जिसका जन्म निम्न वर्ण में हुआ हो - अंत्यज
- जिसका किसी भी प्रकार उल्लंघन नहीं किया जा सके - अनुलंघनीय

- जो न जाना गया हो - अनवगत
- वह स्त्री जिसका पति दूसरा विवाह कर ले - अध्यूढ़ा
- जो अभी तक न आया हो - अनागत
- जिसका कोई दूसरा उपाय न हो - अनन्योपाय
- जिसकी अपेक्षा व चाह न हो - अनपेक्षित
- जिसका आदर न किया गया हो - अनादृत

- किसी मत या प्रस्ताव को समर्थन करने की क्रिया- अनुमोदन
- जिसका कोई निश्चित मत या सिद्धान्त न हो - अनिकेतु
- नीचे की ओर लाना या खींचना - अपकर्ष
- मूल्य घटाने की क्रिया - अवमूल्यन
- जो इधर-उधर से घूमता-फिरता आ जाए - आगन्तुक
- जो आदर करने योग्य हो - आदरणीय

- आशा से अधिक, जिसकी आशा न की गई हो - आशातीत
- ऋषि-निर्मित अथवा कथित - आर्ष
- जो भविष्य के प्रति आशावान हो - आशावादी
- अपने जीवन का स्वलिखित इतिहास - आत्म-कथा
- आश्रय देने वाला - आश्रयदाता
- आलोचना करने वाला - आलोचक

- आदि से अन्त तक - आद्योपान्त
- भगवान के सहारे अनिश्चत आय - आकाशवृत्ति
- जो परम्परा से सुना हुआ हो - आनुश्राविक
- आकाश में गमन (विचरण) करने वाला - आकाशगामी
- अकाश में उड़ने वाला - आकाशचारी
- जन्म भर - आजन्म

- जो अपनी हत्या आप करे - आत्मघाती
- जो अपने पैरों पर खड़ा हो -आत्म-निर्भर
- सिर से पैर तक - आपादमस्तक
- आभार मानने वाला - आभारी
- जो किसी वंश में बराबर चलता आया है - आनुवांशिक
- मरते दम तक - आमरण

- प्राणियों के पेट की वह थैली जिसमें भोजन पचता है - आमाशय
- जिस पर आक्रमण हुआ हो - आक्रांत
- एक देश द्वारा दूसरे देशों से वस्तुओं का मँगाया जाना - आयात
- वह जो दूसरे देशो से वस्तुओं का आयात करता हो

- आयातक

- आयोजन करने वाला व्यक्ति - आयोजक
- धन से सम्बन्धित - आर्थिक
- जो किसी वस्तु या व्यक्ति के गुण-दोष की आलोचना करता हो - आलोचक
- जो आलोचना के योग्य हो - आलोच्य

- किसी अवधि से सम्बंध रखने वाला - आवधिक
- वह कवि जो तत्काल/तत्क्षण कविता कर सकता हो - आशुकवि
- वह क्लर्क जो आशुलिपि (शार्ट हैंड) जानता है - आशुलिपिक
- जिसे विश्वास या दिलासा दिलाया गया हो - आश्वस्त

- दूसरे के (सुख के) लिए अपने सुखों का त्याग - आत्मोत्सर्ग
- यह सिद्धान्त कि मनुष्य को सदा किन्हीं आदर्शों का पालन करते रहना चाहिए - आदर्शवाद
- किसी मत का सर्वप्रथम प्रवर्तन करने वाला - आदि प्रवर्तक
- अधिकारपूर्वक कहा गया या किया गया - आधिकारिक

- किसी देश के वे निवासी जो बहुत पहले से वहाँ रहते आ रहे हैं - आदिवासी
- जो स्वयं का मत मानने वाला हो - आत्मभिमत
- दैव अथवा प्रकृति द्वारा होने वाला (दुःख) -आधिदैविक
- भूतों अर्थात् जीवों द्वारा होने वाला (दुःख) -आधिभौतिक
- किसी वस्तु को आधुनिक रूप देने की क्रिया- आधुनिकीकरण

- अकस्मात् या एकाएक घटित होने वाला - आकस्मिक
- आकाश से सुनाई पड़ने वाली वाणी - आकाशवाणी
- आँतों में होने वाला - आंत्रिक
- आकाश को चूमने वाला - आकाशचुंबी
- जिस पर आक्रमण हो - आक्रान्त
- आक्रमण करने वाला - आक्रमणकारी

- वह स्त्री जिसका पति परदेश से लौटा हो - आगतपतिका
- वह स्त्री जिसका पति परदेश से आने वाला हो - आगमिस्यतपतिका
- अग्नि से संबंधित या आग का - आग्नेय
- पूरे जीवन में - आजीवन
- जो ईश्वर को मानता हो - आस्ति

- जिस पर किसी का आतंक छाया हो - आतंकित
- आत्मा और ईश्वर से सम्बन्ध रखने वाला - आध्यात्मिक
- अतिथि की सेवा करने वाला - आतिथेयी
- अतिथि सत्कार की भावना - आतिथेय
- अपने आप को किसी के हाथ सौंपना या समर्पित करना - आत्मसमर्पण

- ऐसा व्रत जो मरने पर ही समाप्त हो - आमरण व्रत
- ऐसा अनशन जो मरने पर ही समाप्त हो - आमरण अनशन
- किसी अवधि से संबंध रखने वाला - आवधिक
- जिसके अहंकार का नाश हो गया हो - आन्तगर्व
- जन्म लेते ही मर जाना - आदण्डपात
- अत्याचार करने वाला - आततायी

- बालक से वृद्ध तक - आबालवृद्ध
- जड़ से चोटी तक - आमूलचूल
- जन्म लेना और मरना - आवागमन
- भगवान के सहारे अनिश्चित आय - आकाशवृत्ति
- वह जो अपने आचार से पवित्र है - आचारपूर्ण
- जो परम्परा से सुना हुआ हो - आनुश्राविक

- जो इन्द्रियों को वश में कर ले-इन्द्रिय - निग्रहवान
- इतिहास जानने वाला - इतिहासकार
- प्रायः वर्षा ऋतु में आकाश में दिखायी देने वाले सात रंगो वाले धनुष - इंद्रधनुष
- इंद्रियों को वश में रखने वाला, जो इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर चुका हो - इंद्रियजित

- इंद्रियों पर किया जाने वाला वश - इंद्रियानिग्रह
- इन्द्रियों से परे, इन्द्रियों के पहुँच के बाहर - इन्द्रयाती
- अपनी इच्छा के अनुसार सब काम करने वाला- इच्छाचारी
- किसी चीज या बात की इच्छा रखने वाला - इच्छुक
- किन्हीं घटनाओं का कालक्रम से किया गया वृत्त - इतिवृत्त
- इमारत के लिए या इमारत से सबंधित - इमारती

- जो इच्छा के अधीन है - इच्छाधीन
- इतना की पर्याप्त है - इत्यलम
- जिसकी ईप्सा या इच्छा की गई हो - ईप्सित
- जो दूसरों की उन्नति देखकर जलता हो - ईर्ष्यालु
- दूसरों की उन्नती को न देख सकना - ईर्ष्या
- पूरब और उत्तर के बीच की दिशा - ईशान कोण

- दूसरों की उन्नति को न देख सकना - ईर्ष्या
- जिसका संबंध ईसा से हो - ईसवी
- किसी नई चीज को बनाना - आविष्कार
- जो ऊपर कहा गया है - उपर्युक्त
- जो किसी नियम का पालन न करे - उच्छृंखल
- खाने से बचा हुआ जूठा भोजन - उच्छिष्ट

- उपकार करने वाला - उपकारी
- जिस पर किसी काम का उत्तरदायित्व हो - उत्तरदायी
- किसी के बाद उसकी संपत्ति या पद को ग्रहण करने वाला व्यक्ति - उत्तराधिकारी
- जिससे बढ़कर ऊँचा कोई न हो - उच्चतम
- जो सब कुछ उदारता से देना जानता है - उदारमना

- बहुत आगे बढ़ जाने की आकांक्षा - उच्चाकांक्षा
- जो भूमि उपजाऊ हो - उर्वरा
- जिसका उल्लेख करना आवश्यक हो - उल्लेखनीय
- सूर्योदय/अरुणोदय से पहले का समय - उषाकाल
- ऊपर आने वाला श्वास - उच्छ्वास
- नीचे की ओर आना या जाना - उतरना

- ऊपर की ओर उछाला या फेंका हुआ - उत्क्षिप्त
- वह वस्तु जिसका उत्पादन हुआ हो - उत्पाद
- सूर्य जिस पर्वत के पीछे निकलता है - उदयाचल
- जिस पर उपकार किया गया हो - उपकृत
- उपहास के योग्य - उपहासास्पद
- जल स्थल दोनों जगह रहने वाला प्राणी - उभयचर

- जिसने ऋण चुका दिया हो - उऋण
- जिसका जन्म गर्मी में हुआ हो - ऊष्मज
- ऊपर की ओर जाने वाला - ऊर्ध्वगामी
- जिस भूमि में कुछ उत्पन्न न होता हो - ऊसर
- जिसने अपने वीर्य को कपाल में चढ़ा लिया हो - ऊर्ध्वरेता

पर्यायवाची शब्द

1. **अतिथि** – पाहुन, मेहमान, आगंतुक, अभ्यागत

2. **अमृत** – पीयूष, सुधा, अमिय, सोम, सुरभोग

3. **अग्नि** – वैश्वानर, अनल, पावक, कृशानु, हुताशिन, दहन

4. **अनुपम** – अद्वितीय, अनूठा, अपूर्व, अद्भुत, अतुल

5. **अपमान** — अनादर, अवहेलना, तिरस्कार, उपेक्षा, अवज्ञा

6. **अंधकार** — तिमिर, तमस, ध्वान्त, अंधेरा, तम

7. **अश्व** — घोटक, हय, तुरंग, वाजि, सैंधव, घोड़ा

8. **असुर** — यातुधान, दनुज, निशाचर, तमीचर, रजनीचर, दैत्य

9. **अरण्य** — कांतार, विपिन, कानन, वन, अटवी

10. **आँख** — चक्षु, लोचन, नयन, दृग, अक्षि, विलोचन

11. आकाश – व्योम, नभ, शून्य, अनन्त, अम्बर, गगन

12. आनंद – मोद, प्रमोद, हर्ष, उल्लास, आह्लाद

13. आम – रसाल, सहकार, अतिसौरभ, आम्र, पिकबंधु

14. आश्रम – विहार, मठ, संघ, अखाड़ा, कुटी

15. आँसू – अश्रु, नयनजल, नेत्रवारी, दृगजल

16. आत्मा – क्षेत्रज्ञ, जीवात्मा, चैतन्य, विभु, पुरुष

17. **आभूषण** – जेवर, अलंकार, भूषण, मंडन, टुम

18. **आज्ञा** – अनुमति, मंजूरी, स्वीकृति, आदेश, निर्देश

19. **इच्छा** – ईप्सा, स्पृहा, वांछा, आकांक्षा, मनोरथ, चाह

20. **इंद्र** – मघवा, विडौजा, शक्र, पुरंदर, देवराज, सुरपति

21. **इंद्राणी** – शची, पुलोमजा, ऐन्द्री, महेन्द्री, इंद्रवधू

22. **ईश्वर** – जगदीश्वर, परमेश, परमात्मा, ईश, दीनानाथ

23. **ईमानदारी** – निष्कपटता, सदाशयता, सत्यनिष्ठा, ऋजुता

24. **ईर्ष्या** – डाह, मात्सर्य, कुढ़न, द्वेष, रश्क

25. **उत्तम** – श्रेष्ठ, प्रवर, उत्कृष्ट, प्रकृष्ट, बढ़िया

26. **उत्पत्ति** – उद्भव, पैदाइश, जनन, आविर्भाव, प्रादुर्भाव

27. **उत्सव** – समारोह, जलसा, त्योहार, पर्व, मंगलकार्य

28. **उत्साह** – उमंग, जोश, हौसला, अध्यवसाय

ऋजु - सीधा

29. उपवन – आराम, वाटिका, गुलशन, बगिया, उद्यान

30. उदार – दरियादिल, महाशय, महामना, सहृदय

31. उदासीन – विरक्त, वीतराग, निरपेक्ष, तटस्थ

32. उपहास – मखौल, खिल्ली, परिहास, मजाक, लाफ़्टर

33. उपकार – कल्याण, भलाई, परोपकार, हित, साधन

34. उपजाऊ – उर्वरा, जरखेज, फलप्रद, उत्पादक

35. उपदेश – दीक्षा, सीख, नसीहत, शिक्षा, प्रबोधन

36. उपमा – सादृश्य, मिलान, तुलना, समता

37. उपयुक्त – समीचीन, मुनासिब, उचित, तर्कसंगत

38. उपाय – तदबीर, जुगत, युक्ति, ढंग, तरीका

39. उपेक्षा – अवहेलना, उदासीनता, विरक्ति, लापरवाही

40. उल्लास – आनंद, हर्ष, प्रफुल्लता, आह्लाद

41. उल्लू – कौशिक, उलूक, लक्ष्मीवाहन

42. उषा – भोर, प्रातस्कल, तड़का, अरूणोदय

43. ऊँट – उष्ट्र, महाग्रीव, क्रमेलक, लम्बोष्ठ

44. ऊँचा – उत्तुंग, उच्च, बुलंद, शीर्षस्थ

45. ऊर्जा – शक्ति, ओज, स्फूर्ति, बल

46. ऊसर – अनुर्वर, बंजर, मरूभूमि, खाड़ी

HINDI BY ARUN SIR

47. ऊन – मेषरोम, ऊर्ण, ऊर्णा

48. ऊष्मा – तपन, गरमी, संताप, आतप

49. ऊर्मि – लहर, तरंग, वीची, हिलोर

50. ऊधम – उत्पात, हुड़दंग, धमाचौकड़ी, उपद्रव

51. एकता – एका, ऐक्य, मेल, संगठन, एकरूपता

52. ऐश्वर्य – वैभव, विभूति, संपदा, समृद्धि, रिद्धि-सिद्धि

53. **ओज** – तेज, कांति, दीप्ति, चमक, वीर्य, बल

54. **ओठ (होठ)** – अधर, ओष्ठ, रदच्छद, लब

55. **ओस** – तुषार, हिमकण, शबनम, मिहिका, कणिका

56. **औरत** – वनिता, कामिनी, रमणी, प्रमदा, स्त्री, नारी

57. **औषधि** – भेषज, दवा, भेषज-कल्प, औषध

58. **कमल** – इंदीवर, उत्पल, पुंडरीक, राजीव, सरसिज, पद्म

59. **कल्पवृक्ष** – पारिजात, देवद्रुम, मंदार, कल्पतरु, हरिचंदन

60. **कामदेव** – अनंग, मदन, मार, कन्दर्प, पंचशर, मनसिज, रतिपति

61. **कार्तिकेय** – कुमार, षडानन, स्कंद, मयूरवाहन, सर्पशत्रु

62. **कालिंदी (यमुना)** – अर्कजा, कृष्णा, सूर्यतनया, तरणिप्रभा, भानुजा

63. **किरण** – मरीचि, मयूख, अंशु, कर, रश्मि, दीप्ति

64. **कुबेर** – किन्नरेश, यक्षराज, धनद, धनाधिप, राजराज

65. कोयल – कोकिल, पिक, परभृत, मदनशलाका, वसंतदूत

66. कौआ – काक, वायस, एकाक्ष, काग, पिशुन

67. कपड़ा – चीर, वसन, पट, अम्बर, दुकूल, परिधान

68. कन्या – दुहिता, तनया, आत्मजा, सुता, कुमारिका

69. कटु – तीक्ष्ण, कड़वा, परुष, कड़ा, कर्कश

70. कठिन – दुष्कर, दुसाध्य, जटिल, विषम, क्लिष्ट

71. **कूटनीति** – कूटचाल, छल-प्रपंच, चालबाजी, कपटनीति

72. **कल्याण** – शिव, मंगल, भद्र, भलाई, हित, श्रेय

73. **कष्ट** – क्लेश, व्यथा, यातना, पीड़ा, संताप

74. **कवि** – रचयिता, काव्यकार, कल्पक, रचनाकार

75. **कसूर** – दोष, अपराध, खता, भूल, त्रुटि

76. **कहानी** – आख्यायिका, वृत्तांत, कथा, किस्सा, गल्प

77. **कायर** – भीरू, डरपोक, बुजदिल, कापुरूष

78. **किनारा** – तट, तीर, कूल, पुलिन, पर्यंत

79. **किला** – दुर्ग, कोट, गढ़, गढ़ी, प्राकार

80. **कुत्ता** – श्वान, कुक्कुर, शुनक, सारमेय

81. **क्रोध** – अमर्ष, कोप, रोष, रूष्टता, तैश

82. **कृषक (किसान)** – हलधर, भूमिपुत्र, खेतीहर, अन्नदाता

HINDI BY ARUN SIR

83. कृपा – अनुग्रह, अनुकम्पा, दया, करुणा, मेहरबानी

84. कृष्ण – दामोदर, हृषीकेश, माधव, अच्युत, मुरारी, वासुदेव

85. कौतूहल – जिज्ञासा, उत्सुकता, कुतूहल, अचरज

86. कलंक – लांछन, दाग, दोष, अपयश, कालिख

87. कर (हाथ) – हस्त, पाणि, बाहु, भुजा

88. कंचन (सोना) – हाटक, हेम, जातरूप, कुन्दन, कनक

89. कारागार – बंदीगृह, जेल, कैदखाना, कारावास

90. कीर्ति – यश, ख्याति, प्रसिद्धि, नेकनामी

91. केंचुआ – भू-कृमि, गंडूपद, शिलीमुख, केंचुलधारी

92. केकड़ा – कुलीर, कर्क, कर्कट

93. कंकर – प्रस्तर-कण, शर्करा, अश्म-चूर्ण

94. काँटा – शूल, कंटक, शल्य, नोक

95. कपट – छल, प्रपंच, व्याज, वंचना, धोखा

96. कली – कोरक, कोंपल, मुकुल, ताम्रपल्लव, अखिला फूल

97. कम्पन – स्पंदन, थरथराहट, वेपथु, हिलन

98. कवच – चर्म, वर्म, बख्तर, लोहवस्त्र

99. काँस – शर-घास, इक्षुगंधा, श्वेत-केतु

100. कुमुदिनी – नलिनी, कैरव, चंद्रप्रिया, उत्पलिनी

HINDI BY ARUN SIR

101. **खग (पक्षी)** – विहग, विहंग, शकुनि, पखेरु, नभचर, द्विज

102. **खल (दुष्ट)** – पिशुन, शठ, धूर्त, दुर्जन, कुटिल, अधम

103. **खजाना** – कोष, निधि, भंडार, शेवधि

104. **खून** – शोणित, रक्त, रुधिर, लहू

105. **गंगा** – जाह्नवी, त्रिपथगा, भागीरथी, सुरसरि, विष्णुपदी

106. **गरुड़** – खगेश, उरगारि, हरियान, वातनेय, वासुकीशत्रु

107. गधा – खर, वैशाखनंदन, रासभ, धूसर, गदहा, बेसर

108. गणेश – हेरम्ब, द्वैमातुर, विनायक, लम्बोदर, विघ्नराज

109. गीदड़ – जम्बुक, शृंगाल, सियार, फेरु

110. गाय – भद्रा, सुरभि, धेनु, गौ, गयंद

111. गृह – निकेतन, अयन, निलय, गेह, शाला, भवन, धाम

112. घड़ा – कुम्भ, कलश, गागर, घट, निप

113. **घी** – घृत, नवनीत, आज्य, हवि

114. **घोड़ा** – हय, तुरंग, वाजि, अश्व, घोटक, सैंधव

115. **चतुर** – प्रविण, नागर, पटु, कुशल, दक्ष, निपुण

116. **चंद्रमा** – विधाता, सुधांशु, राकेश, शशांक, मयंक, निशाकर, इंदु

117. **चाँदनी** – कौमुदी, ज्योत्स्ना, चंद्रिका, अमृततरंगिणी

118. **चोर** – खनक, मोषक, तस्कर, कुम्भिल, साहसिक, रजनीचर

119. **छाछ** – तक्र, गोरस, मट्ठा, मही

120. **जल** – उदक, तोय, वारि, नीर, सलिल, अम्बु, पय

121. **जंगल** – कांतार, विपिन, कानन, अटवी, वन

122. **जीभ** – रसना, रसज्ञा, जिह्वा, रसाल, चंचला

123. **झंडा** – केतु, ध्वज, वैजयंती, पताका, निशान

124. **तलवार** – असि, करवाल, कृपाण, खड्ग, चंद्रहास

125. तालाब – सरसि, पुष्कर, तड़ाग, सरोवर, पद्माकर, हद

126. तारा – नक्षत्र, तारक, उडु, सितारा

127. ताकना (देखना) – विलोकन, अवलोकन, घूरना, निहारना

128. तिनका – तृण, घास, तील, शलाका

129. तोता – शुक, सुआ, कीर, सुग्गा, रक्ततुण्ड

130. तरकश – तूणीर, निषंग, तूण, इषुधि

131. तरूणी (युवती) – प्रमदा, रमणी, कामिनी, वनिता, सुन्दरी

132. तरणि (सूर्य) – मार्तण्ड, सविता, भानु, भास्कर, आदित्य

133. तरणी (नाव) – नौका, पतंग, डोंगी, तरी

134. तिमिर (अंधेरा) – तम, ध्वान्त, तमस, अंधकार

135. तीखा – तीक्ष्ण, पैना, प्रखर, कटु

136. थकावट – क्लान्ति, श्रान्ति, शिथिलता, थकान

137. **थोड़ा** – अल्प, न्यून, स्वल्प, किंचित्, कम

138. **थप्पड़** – चपत, तमाचा, झापड़

139. **थाह** – गहराई, अंत, माप, सीमा

140. **थाली** – परात, कांस्यपात्र, भोजनपात्र

141. **थल** – भूतल, भूमि, धरातल, जमीन

142. **थन** – पयोधर, कुच, चूचुक, स्तन

143. **थका हुआ** – क्लांत, श्रांत, शिथिल, थकित

144. **दया** – अनुकम्पा, करुणा, कृपा, प्रसाद, रहम

145. **दाँत** – रदन, दशन, द्विज, मुखखुर

146. **दरिद्र** – अकिंचन, कंगाल, निर्धन, दीन

147. **दामिनी (बिजली)** – चंचला, तड़ित, विद्युत, सौदामिनी, क्षणप्रभा

148. **दासी** – परिचारिका, अनुचरी, बाँदी, किंकरी, दासी

149. दिन – वासर, अह्न, दिवस, वार, रोज

150. दीया (दीपक) – प्रदीप, देदीप्यमान, दीप, चिराग

151. धनुष – चाप, कोदंड, कमान, शरासन, पिनाक

152. धूप – घाम, आतप, द्योत, मरीचि

153. धनी – धनवान, समृद्ध, मालदार, धनद, रईस

154. धरती – अचला, वसुंधरा, मेदिनी, इला, क्षिति, उर्वी

155. धरोहर – थाती, अमानत, न्यास, जमा

156. धीरज – धैर्य, संतोष, सब्र, तसल्ली

157. नदी – सरिता, तरंगिणी, तटिनी, निम्नगा, आपगा, कूलंकषा

158. नरक – यमलोक, रौरव, कुंभीपाक, जहन्नुम

159. नवनीत (मक्खन) – लोनी, माखन, दधिसार

160. नया – नूतन, नव्य, अभिनव, नवीन, अर्वाचीन

161. नाश — विनाश, संहार, ध्वंस, तबाही

162. नाव — नौका, तरी, तरणी, पतंग, डोंगी

163. निंदा — भर्त्सना, अपवाद, बुराई, कुत्सा

164. नियति — भाग्य, होनहार, भवितव्यता, प्रारब्ध

165. निर्मल — स्वच्छ, पावन, पुनीत, विमल, शुद्ध

166. नौकर — अनुचर, चाकर, भृत्य, किंकर, परिचारक

167. **पंडित** — सुधी, मनीषी, विद्वान, प्राज्ञ, कोविद

168. **पति** — भर्ता, वल्लभ, आर्यपुत्र, स्वामी, ईश

169. **पत्नी** — दारा, वामा, कलत्र, अर्धांगिनी, गृहलक्ष्मी

170. **पर्वत** — महीधर, शैल, अचल, नग, भूधर, तुंग

171. **पवन** — प्रकंपन, समीर, मारुत, वात, अनिल, वायु

172. **पानी** — तोय, वारि, नीर, सलिल, उदक, अम्बु

173. पार्वती – शैलसुता, गिरिजा, उमा, भवानी, आर्या, अंबिका

174. पिता – जनक, तात, जनक, जन्मदाता

175. पुत्र – आत्मज, सुत, तनय, नंदन, बेटा

176. पुत्री – आत्मजा, सुता, तनया, नंदिनी, बेटी

177. पृथ्वी – क्षिति, वसुधा, मेदिनी, अचला, धरित्री

178. प्रकाश – आलोक, दीप्ति, प्रभा, छवि, प्रभा

179. प्रख्यात – विश्रुत, प्रसिद्ध, विख्यात, यशस्वी

180. प्रपात (झरना) – उत्स, निर्झर, जलप्रपात, सोता

181. प्रेम – अनुराग, प्रीति, स्नेह, नेह, प्यार

182. पेड़ – विटप, पादप, तरु, द्रुम, दरख्त, रूख

183. फल – शस्य, बीजकोश, फलप्रद, लाभ

184. फूल – प्रसून, पुहुप, सुमन, कुसुम, गुल

185. बंदर – मर्कट, कीश, वानर, हरि, शाखामृग

186. बाण – विशिख, शिलीमुख, तीर, शर, इषु

187. बादल – पयोद, वारिद, अंबुद, नीरद, जीमूत, मेघ

188. बालक – शिशु, अर्भक, वत्स, कुमार

189. बागीचा – वाटिका, उपवन, निकुंज, आराम, उद्यान

190. बकरा – छाग, अज, मेष, छैल

191. बिजली – क्षणप्रभा, तड़ित, सौदामिनी, चंचला

192. बुद्धि – मेधा, प्रज्ञा, मनीषा, मति, धी

193. ब्रह्मा – चतुरानन, धाता, विधाता, विरंचि, प्रजापति

194. ब्राह्मण – विप्र, द्विज, भूसुर, भूदेव

195. बलदेव – हलधर, बलभद्र, रेवतीरमण, रोहिणेय

196. बलराम – बलवीर, संकर्षण, हली, मुसली

197. बसंत – मधुमास, कुसुमाकर, ऋतुराज, पिकमित्र

198. बहन – सहोदरा, भगिनी, स्वसा, बाँधवी

199. बहुत – प्रचुर, अमित, प्रभूत, विपुल, अतीव

200. बीमार – रुग्ण, व्याधित, अस्वस्थ, आतुर

201. भय – भीति, त्रास, खौफ़, डर, आतंक

202. भाई – सहोदर, भ्राता, तात, अग्रज (बड़ा भाई), अनुज (छोटा भाई)

203. **भाग्य** – प्रारब्ध, नियति, भवितव्यता, तकदीर, नसीब

204. **भालू** – रीछ, ऋक्ष, भल्लुक, धीमंत

205. **भाषा** – बोली, जुबान, वाणी, वाक्, कण्ठध्वनि

206. **भँवरा (भ्रमर)** – षट्पद, मिलिंद, अली, चंचरीक, मधुप, द्विरेफ

207. **भलाई** – कल्याण, हित, परोपकार, नेकी, उपकार

208. **मगरमच्छ** – नक्र, ग्राह, जलहस्ती, मकर

209. **मछली** – झष, मीन, मत्स्य, जलजीवन, सफरी

210. **मदिरा (शराब)** – आसव, वारुणी, हाला, कादम्बरी, मद्य, सुरा

211. **महादेव (शिव)** – त्रिलोचन, विरूपाक्ष, चंद्रमौली, मदनारि, कपर्दी, चंद्रशेखर

212. **मनुष्य** – मनुज, मानुष, मर्त, मानव, नर

213. **मोर** – केकी, शिखंडी, कलापी, ध्वजी, नीलकंठ, सारंग

214. **मोक्ष** – कैवल्य, अपवर्ग, निर्वाण, परमपद, मुक्ति

215. **मूर्ख** – जड़, अज्ञ, मूढ़, विवेकहीन, बोदा

216. **मेंढक** – मंडूक, दर्दर, वर्षाभू, दादुर, सालूर

217. **मैना** – सारिका, कलहप्रिया, चित्रलोचना, मदना

218. **यमराज** – कृतांत, धर्मराज, जीवितेश, शमन, दण्डधर, अंतक

219. **राजा** – महीप, भूपति, नरेंद्र, नृप, भूप, भूपाल

220. **रात** – विभावरी, शर्वरी, त्रियामा, रजनी, निशि, यामिनी

221. रामचंद्र – राघव, कौशल्यानंदन, सीतापति, कमलनयन, मर्यादापुरुषोत्तम

222. रावण – दसानन, दशग्रीव, दशकंधर, लंकेश, यातुधानेंद्र

223. लक्ष्मी – भार्गवी, सिंधुसुता, हरिप्रिया, पद्मा, रमा, चंचला

224. लहर (ऊर्मि) – वीची, तरंग, हिलोर, कल्लोल

225. लज्जा – व्रीडा, हया, शर्म, संकोच, झिझक

226. वायु (हवा) – प्रकंपन, समीर, मारुत, वात, अनिल, पवन

227. वानर – शाखामृग, मर्कट, कीश, कपि, हरि

228. विष – गरल, कालकूट, हलाहल, ज़हर

229. विष्णु – अच्युत, उपेंद्र, हृषीकेश, दामोदर, मुकुंद, गोविंद

230. वृक्ष – विटप, द्रुम, पादप, तरु, साखी, गाछ

231. वेश्या – गणिका, वारांगना, पतुरिया, रंडी, रामजनी

232. शत्रु – अराति, रिपु, वैरी, द्वेषी, अरी

233. **शरीर** – गात, क्लेवर, वपु, काया, तन, देह

234. **शहद** – पुष्पआसव, मकरंद, मधु, माक्षिक

235. **शिकारी** – व्याध, अहेरी, लुब्धक, बहेलिया

236. **श्रीकृष्ण** – हृषीकेश, अच्युत, दामोदर, मुरारी, वासुदेव, माधव

237. **श्वजन (कुत्ता)** – श्वान, कुक्कुर, सारमेय, शुनक

238. **स्वजन (अपने लोग)** – सगे-संबंधी, आत्मीय, बंधु-बांधव, कुटुंब

239. समुद्र – अर्णव, अब्धि, नदीश, वारिधि, रत्नाकर, तोयधि

240. सरस्वती – वाग्देवी, भारती, शारदा, वीणापाणि, गिरा, ब्राह्मी

241. साँप – उरग, पन्नग, भुजंग, व्याल, अहि, चक्षुश्रवा

242. समूह – गण, वृंद, निकर, पुंज, निकाय, स्तवक

243. सिंह – शार्दूल, केहरि, नाहर, मृगेंद्र, वनराज, पंचानन

244. सूर्य – तरणि, मार्तंड, सविता, भानु, भास्कर, आदित्य

245. सोना (कंचन) – हाटक, हेम, जातरूप, कुंदन, कनक, स्वर्ण

246. स्वर्ग – द्यौ, नाक, सुरलोक, त्रिविष्टप, देवलोक

247. हंस – मराल, चक्रांग, मानसौक, कलहंस

248. हाथी – द्विरद, मातंग, कुंजर, गयंद, करी, हस्ती, द्विप

249. हिमालय – गिरिराज, नगपति, शैलेंद्र, हिमाचल, हिमाद्रि

250. ज्ञान – बोध, संज्ञान, चैतन्य, समझ, विवेक

Thank you